SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

वाराणसी नगर निगम क्षेत्र की मलिन बस्तियों में निवासरत लोगों की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का अध्ययन

उन्नति सहाय, शोध छात्रा, राजनीति विज्ञान विभाग
महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी, उत्तरप्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
उन्नति सहाय, शोध छात्रा
E-mail : unnatisahai@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 30/01/2025
Revised on : 31/03/2025
Accepted on : 09/04/2025
Overall Similarity : 04% on 01/04/2025

शोध सार

प्रस्तुत शोध अध्ययन वाराणसी नगर निगम क्षेत्र की मलिन बस्तियों में निवासरत लोगों की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का विश्लेषण करता है। मलिन बस्तियाँ शहरी गरीबी, असमानता और बुनियादी सुविधाओं की कमी को दर्शाती हैं। अध्ययन में प्रमुख मलिन बस्तियाँ नगवां, मदनपुरा, मलदहिया और बजरडीहा शामिल हैं, जिनके 162 परिवारों का सर्वेक्षण किया गया। परिणामों से स्पष्ट होता है कि इन बस्तियों में शिक्षा का स्तर कम है, विशेष रूप से महिलाओं में निरक्षरता अधिक है। अधिकांश लोग असंगठित क्षेत्र में कार्यरत् हैं, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति अस्थिर बनी रहती है। बस्तियों में शुद्ध पेयजल, शौचालय और स्वास्थ्य सेवाओं की भारी कमी है, जिससे निवासियों को गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं का सामना करना पड़ता है। अध्ययन सुझाव देता है कि शिक्षा सुधार, स्वरोजगार के अवसर, स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता, और सरकारी योजनाओं की प्रभावी क्रियान्वयन से इन बस्तियों की स्थिति में सुधार किया जा सकता है। सरकार, गैर–सरकारी संगठनों और समाज के सहयोग से ही इन क्षेत्रों का समग्र विकास संभव है। यह अध्ययन नीति निर्माताओं को इन बस्तियों की समस्याओं को समझने और प्रभावी समाधान विकसित करने में सहायता प्रदान करेगा।

मुख्य शब्द

मलिन बस्ती, वाराणसी, नगर निगम, आवास, स्वास्थ्य, रोजगार.

भूमिका

मलिन बस्तियाँ शहरी क्षेत्रों में गरीबी, असमानता और सामाजिक बहिष्कार का प्रतीक हैं। ये बस्तियाँ आमतौर पर अवैध रूप से बसाई गई होती हैं और इनमें

रहने वाले लोगों को बुनियादी सुविधाओं जैसे स्वच्छ पानी, स्वच्छता, बिजली, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं की कमी का सामना करना पड़ता है। वाराणसी नगर निगम क्षेत्र में स्थित मलिन बस्तियों में रहने वाले लोगों की सामाजिक और आर्थिक स्थिति का अध्ययन करने से हमें इन समुदायों की वास्तविकताओं को समझने में मदद मिलेगी। इसके साथ ही, यह अध्ययन नीति निर्माताओं और सामाजिक कार्यकर्ताओं को इन समुदायों की समस्याओं को दूर करने के लिए प्रभावी उपाय विकसित करने में सहायता प्रदान करेगा।

वाराणसी, जिसे काशी नाम से भी जाना जाता है, भारत के सबसे प्राचीन और धार्मिक महत्व वाले शहरों में से एक है। यह शहर अपनी सांस्कृतिक विरासत, धार्मिक महत्व और ऐतिहासिक गौरव के लिए विश्व भर में प्रसिद्ध है। हालांकि, इस शहर की चमकदार छवि के पीछे एक और सच्चाई भी छिपी हुई है, जो इसके मलिन बस्तियों में निवास करने वाले लोगों की सामाजिक और आर्थिक स्थिति से जुड़ी है। वाराणसी नगर निगम क्षेत्र में स्थित इन मलिन बस्तियों में रहने वाले लोगों की जीवनशैली, उनकी आर्थिक स्थिति और सामाजिक परिस्थितियों का अध्ययन करना एक महत्वपूर्ण विषय है, जो न केवल शहरी विकास की चुनौतियों को उजागर करता है, बल्कि समाज के एक बड़े वर्ग की उपेक्षा को भी दर्शाता है। वाराणसी की मलिन बस्तियों में रहने वाले लोगों की सामाजिक स्थिति अक्सर जाति, धर्म और लिंग जैसे कारकों से प्रभावित होती है। इन बस्तियों में अक्सर अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और अन्य पिछड़े वर्गों के लोग रहते हैं, जो सदियों से सामाजिक भेदभाव और आर्थिक शोषण का शिकार रहे हैं। इन समुदायों के लोगों को शिक्षा, रोजगार और स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँचने में कई बाधाओं का सामना करना पड़ता है। इसके अलावा, महिलाओं और बच्चों की स्थिति और भी गंभीर है, क्योंकि उन्हें लिंग आधारित हिंसा और शोषण का खतरा अधिक होता है।

आर्थिक दृष्टिकोण से देखें तो, वाराणसी की मलिन बस्तियों में रहने वाले लोगों की आय का मुख्य स्रोत असंगठित क्षेत्र में काम करना है। इनमें से अधिकांश लोग दिहाड़ी मजदूर, रिक्शा चालक, सड़क विक्रेता, घरेलू कामगार और छोटे–मोटे कारीगर होते हैं। इनकी आय अनियमित और कम होती है, जिसके कारण उन्हें गरीबी और आर्थिक असुरक्षा का सामना करना पड़ता है। इसके अलावा, इन बस्तियों में बच्चों की शिक्षा और स्वास्थ्य पर भी आर्थिक तंगी का गहरा प्रभाव पड़ता है। अधिकांश बच्चे स्कूल छोड़कर काम करने के लिए मजबूर हो जाते हैं, जिससे उनका भविष्य अंधकारमय हो जाता है।

प्रस्तुत अध्ययन में वाराणसी नगर निगम क्षेत्र की मलिन बस्तियों में रहने वाले लोगों की सामाजिक और आर्थिक स्थिति का विस्तृत विश्लेषण करना है। इसके माध्यम से हम इन समुदायों की समस्याओं को समझने और उनके जीवन स्तर को सुधारने के लिए संभावित समाधानों की तलाश करेंगे। इस अध्ययन में हम इन बस्तियों में रहने वाले लोगों की शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, आवास और सामाजिक सुरक्षा से जुड़े मुद्दों पर विशेष ध्यान देंगे। साथ ही, हम यह भी जानने का प्रयास करेंगे कि सरकारी और गैर–सरकारी संगठनों द्वारा चलाई जा रही योजनाओं का इन समुदायों तक कितना लाभ पहुँच रहा है।

साहित्य समीक्षा

मलिन बस्तियाँ (Slums) शहरीकरण की एक महत्वपूर्ण सामाजिक एवं आर्थिक चुनौती हैं। ये बस्तियाँ आमतौर पर बुनियादी सुविधाओं की कमी, भीड़भाड़, अस्वच्छता और अस्थिर आवास स्थितियों की विशेषता रखती हैं। इस संदर्भ में विभिन्न शोधों ने मलिन बस्तियों की समस्याओं, उनके समाधान और सरकारी नीतियों के प्रभावों का विश्लेषण किया है।

शर्मा एवं अन्य (2018) ने अपने अध्ययन में भारत की शहरी मलिन बस्तियों में रहने वाले लोगों की जीवन गुणवत्ता का आकलन करता है। शोध में पाया गया कि मलिन बस्तियों में रहने वाले अधिकांश परिवारों को पीने के साफ पानी, स्वच्छता और स्वास्थ्य सेवाओं की भारी कमी का सामना करना पड़ता है। शोध ने सुझाव दिया कि सरकारी योजनाओं को प्रभावी ढंग से लागू करने और सामुदायिक भागीदारी बढ़ाने की आवश्यकता है।

गुप्ता एवं सिंह (2020) के अनुसार मलिन बस्तियों में रहने वाले लोगों के स्वास्थ्य और स्वच्छता पर ध्यान केंद्रित किया। शोध में पाया गया कि खराब स्वच्छता और दूषित जल आपूर्ति के कारण मलिन बस्तियों में जलजनित रोगों की घटनाएँ अधिक होती हैं। शोध में यह भी स्पष्ट किया गया कि स्वच्छ भारत अभियान जैसी सरकारी योजनाओं का प्रभाव सकारात्मक रहा है, लेकिन अभी भी व्यापक सुधार की आवश्यकता है।

वर्मा एवं अन्य (2019) के शोध में मलिन बस्तियों में रहने वाले लोगों की आय, रोजगार और शिक्षा स्तर का अध्ययन किया गया। शोध में निष्कर्ष निकला कि इन बस्तियों में रहने वाले अधिकांश लोग असंगठित क्षेत्र में कार्यरत हैं और उनके पास स्थायी रोजगार का अभाव है। शिक्षा की कमी के कारण उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार करना कठिन हो जाता है। शोध ने सुझाव दिया कि सरकार को शिक्षा और स्वरोजगार के अवसर बढ़ाने पर ध्यान देना चाहिए।

मिश्रा एवं चतुर्वेदी (2021) ने प्रधानमंत्री आवास योजना और झुग्गी पुनर्वास योजनाओं के प्रभावों का विश्लेषण किया। शोध में पाया गया कि इन योजनाओं ने कुछ हद तक मलिन बस्तियों की स्थिति में सुधार किया है, लेकिन उनकी धीमी गति और क्रियान्वयन की चुनौतियों के कारण संपूर्ण लाभ प्राप्त नहीं हो सका है। शोध ने निष्कर्ष निकाला कि इन योजनाओं की सफलता के लिए प्रशासनिक पारदर्शिता और नागरिक भागीदारी बढ़ाने की जरूरत है।

मलिन बस्तियों से संबंधित शोध बताते हैं कि वहाँ की मुख्य समस्याएँ स्वच्छता, स्वास्थ्य, शिक्षा, रोजगार और आवास से जुड़ी हुई हैं। हालाँकि सरकारी योजनाएँ और नीतियाँ इन मुद्दों को हल करने के लिए कार्यरत हैं, फिर भी उनके प्रभाव को अधिक सशक्त बनाने के लिए सुधारों की आवश्यकता है।

अध्ययन क्षेत्र

वाराणसी नगर निगम की प्रमुख मलिन बस्तियाँ जैसे कि नगवां, मलदहिया, मदनपुरा और बजरडीहा आदि से 162 परिवारों का यादृच्छिक (random) चयन किया गया।

अध्ययन का उद्देश्य

मलिन बस्तियाँ शहरीकरण का एक अविभाज्य अंग बन चुकी हैं, जहाँ रहने वाले लोगों को बुनियादी सुविधाओं की कमी, असुरक्षित रोजगार, स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ, शिक्षा की अनुपलब्धता जैसी कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इस शोध के निम्नलिखित उद्देश्य हैं:

1. वाराणसी नगर निगम क्षेत्र में मलिन बस्तियों की पहचान करना।
2. वहाँ निवासरत लोगों की सामाजिक स्थिति का अध्ययन करना।
3. उनकी आर्थिक स्थिति, रोजगार स्रोत और आय के स्तर का विश्लेषण करना।
4. सुधारात्मक उपाय सुझाना।

शोध पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन में प्राथमिक और द्वितीयक डेटा संग्रहण विधियों का उपयोग किया गया है, जिसमें प्राथमिक डेटा जिनमें; सर्वेक्षण, साक्षात्कार एवं प्रत्यक्ष अवलोकन के माध्यम से तथा द्वितीयक आंकड़े; जिनमें, विभिन्न शोध–पत्र एवं पत्रिकाएं, समाचार पत्र, सरकारी रिपोर्ट, नगर निगम के दस्तावेज़, जनगणना रिपोर्ट इत्यादि से तथ्य एवं सूचनाएं संग्रहित की गयीं हैं।

आंकड़ा विश्लेषण

जनसांख्यिकी एवं आवास की स्थिति

वाराणसी नगर निगम क्षेत्र में अवस्थित मलिन बस्तियों की पहचान एवं जनसांख्यकीय आंकड़े निम्नलिखित

आंकड़ो का संग्रहण सर्वेक्षण के माध्यम से किया गया है:

तालिका 1

मलिन बस्ती क्षेत्र	कुल जनसंख्या	पुरुष	महिलाएं	कुल आवास	पक्का आवास	झुग्गी झोपड़ी
नगवां	1560	812	748	54	14	40
मदनपुरा	688	372	316	36	9	27
मलदहिया	498	257	241	29	10	19
बजरडीहा	762	388	374	43	12	31
कुल	3508	1829	1679	162	45	117

(स्रोतः प्राथमिक समंक)

उपर्युक्त आंकड़ों का विश्लेषण निम्नलिखित बिंदुओं के आधार पर किया जा सकता है;

- **आवासीय स्थितिः** नगवां की जनसंख्या सबसे अधिक (1560) है, जबकि मलदहिया की सबसे कम (498)। सभी बस्तियों में पुरुषों की संख्या महिलाओं से अधिक है, लेकिन यह अंतर अधिक नहीं है।
- **आवासीय स्थितिः** आवासों की तुलना में पक्के आवास बहुत कम हैं, जबकि झुग्गी–झोपड़ियों की संख्या अधिक है। नगवां में कुल 54 आवास हैं, लेकिन केवल 14 पक्के मकान हैं, बाकी 40 झुग्गी–झोपड़ियां हैं। मदनपुरा और बजरडीहा में भी झुग्गी–झोपड़ियों की संख्या अधिक है, जबकि मलदहिया में 29 कुल आवासों में से केवल 10 पक्के मकान हैं।
- **रहन सहन की स्थितिः** मलिन बस्तियों में झुग्गी–झोपड़ियों की अधिकता यह दर्शाती है कि वहां रहने वाले लोग निम्न आर्थिक वर्ग से आते हैं। पक्के आवासों संख्या अपेक्षाकृत कम है, जो सुविधाओं की कमी और बुनियादी ढांचे की कमजोर स्थिति को दर्शाता है।
- **बस्तियों की तुलनाः** नगवां में सबसे अधिक लोग रहते हैं, लेकिन झुग्गी–झोपड़ियों की संख्या भी सबसे ज्यादा है। वहीं मदनपुरा और बजरडीहा में भी स्थिति गंभीर है क्योंकि झुग्गी–झोपड़ियों की संख्या अधिक है। मलदहिया में कुल आवासों की संख्या सबसे कम (29) है, लेकिन पक्के मकानों का अनुपात थोड़ा बेहतर दिखता है।

मलिन बस्तियों के निवासियों की सामाजिक स्थिति

हम मलिन बस्तियों के सामाजिक स्थिति को निम्न लिखित बिंदुओं के आधार पर समझ सकते हैं:

शिक्षा स्तर

प्रस्तुत तालिका में अध्ययन क्षेत्र में यादृच्छिक रूप से 200 लोगों के शैक्षणिक स्थिति का सर्वेक्षण किया गया है जिनमें 110 पुरुष एवं 90 महिलाएं शामिल हैं:

तालिका 2

शैक्षणिक स्तर	महिला	पुरुष	कुल
निरक्षर	52	32	84
साक्षर	22	48	70
पांचवी कक्षा	11	15	26
उच्च प्राथमिक	05	10	15
हाई स्कूल	––	05	05
अन्य	––	––	––
योग	90	110	200

(स्रोतः प्राथमिक समंक)

दिए गए आंकड़ों के आधार पर हम विभिन्न स्तरों पर शिक्षा की स्थिति का विश्लेषण कर सकते हैं;

1. **निरक्षरता का स्तरः** कुल 84 लोग निरक्षर हैं, जिनमें 52 महिलाएँ और 32 पुरुष शामिल हैं। यह दर्शाता है कि महिलाओं में निरक्षरता दर अधिक है।
2. **साक्षरता का स्तरः** कुल 70 लोग साक्षर हैं, जिनमें 22 महिलाएँ और 48 पुरुष शामिल हैं। पुरुषों में साक्षरता दर महिलाओं की तुलना में अधिक है।
3. **प्राथमिक शिक्षा (पाँचवी कक्षा तक):** कुल 26 लोग इस श्रेणी में आते हैं, जिनमें 11 महिलाएँ और 15 पुरुष शामिल हैं। यहाँ भी पुरुषों की संख्या अधिक है।
4. **उच्च प्राथमिक (आठवीं कक्षा तक):** कुल 15 लोग इस स्तर तक पढ़े हैं, जिनमें 05 महिलाएँ और 10 पुरुष हैं। उच्च प्राथमिक स्तर पर भी पुरुषों की संख्या महिलाओं से अधिक है।5. हाई स्कूल स्तररू केवल 05 पुरुषों ने हाई स्कूल तक शिक्षा प्राप्त की है, जबकि कोई महिला इस स्तर तक नहीं पहुँची।

स्वास्थ्य एवं स्वच्छता

प्रस्तुत तालिका में विभिन्न मलिन बस्तियों में शुद्ध जल, शौचालय एवं स्वास्थ्य सुविधाओं की उपलब्धता का सर्वेक्षण किया गया हैः

तालिका 3

मलिन बस्ती क्षेत्र	शुद्ध जल उपलब्धता (प्रतिशत में)	शौचालय उपलब्धता (प्रतिशत में)	सरकारी अस्पताल उपलब्धता
नगवां	40%	65%	उपलब्ध
मदनपुरा	55%	53%	अनुपलब्ध
मलदहिया	62%	45%	अनुपलब्ध
बजरडीहा	44%	52%	अनुपलब्ध

(स्रोतः प्राथमिक समंक)

उपर्युक्त आंकड़ों के आधार पर मलिन बस्तियों में बुनियादी सुविधाओं की स्थिति का विश्लेषण किया जा सकता है।

शुद्ध जल की उपलब्धता सबसे कम नगवां (40%) एवं सबसे अधिक मलदहिया (62%) में है। औसत शुद्ध जल उपलब्धतारू 50.25ः। अतः मलिन बस्तियों में शुद्ध जल की उपलब्धता कम है, और यह 50% के आसपास ही सीमित है, जो स्वच्छता और स्वास्थ्य के लिए चुनौतीपूर्ण हो सकता है।

शौचालय की उपलब्धता रू सबसे अधिकरू नगवां (65%) तथा सबसे कमरू मलदहिया (45%) में है। कुल औसत शौचालय उपलब्धतारू 53.75% है।अतः हम कह सकते हैं कि शौचालय की सुविधा 50–65% के बीच है, जिसका अर्थ है कि अभी भी एक बड़ी आबादी खुले में शौच के लिए मजबूर हो सकती है।

सरकारी अस्पताल की उपलब्धतारू केवल नगवां में सरकारी अस्पताल उपलब्ध है। अन्य तीन मलिन बस्तियों (मदनपुरा, मलदहिया, बजरडीहा) में अस्पताल उपलब्ध नहीं है। स्वास्थ्य सेवाओं की भारी कमी है। सरकारी अस्पताल की अनुपलब्धता गंभीर स्वास्थ्य समस्याएँ पैदा कर सकती है।

निष्कर्ष

उपरोक्त आंकड़े यह दर्शाते हैं कि इन मलिन बस्तियों में जनसंख्या घनत्व अधिक है, लेकिन आवास की स्थिति बहुत खराब है। पक्के मकानों की संख्या बहुत कम है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि इन क्षेत्रों में आर्थिक और सामाजिक सुधार की अत्यधिक आवश्यकता है।

महिलाओं में शिक्षा का स्तर कम है, निरक्षर महिलाओं की संख्या पुरुषों से कहीं अधिक है। साक्षरता दर में लैंगिक असमानता, पुरुषों में साक्षरता दर अधिक है। शिक्षा के उच्च स्तर पर लैंगिक अंतर बढ़ता है, हाई स्कूल स्तर

तक केवल पुरुष पहुँचे हैं, जबकि कोई महिला इस स्तर तक नहीं है। सामाजिक विकास की आवश्यकता, महिलाओं की शिक्षा में सुधार लाने के लिए विशेष प्रयासों की जरूरत है। अगर गहराई से विश्लेषण किया जाए, तो यह समंक दर्शाता है कि महिलाओं की शिक्षा में अभी भी बड़े सुधार की आवश्यकता है।

मलिन बस्तियों में शुद्ध जल, शौचालय और स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी स्पष्ट रूप से दिखती है। इन क्षेत्रों में समुचित योजनाएँ बनाकर इन बुनियादी सुविधाओं में सुधार करना आवश्यक है। स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी के कारण लोग मुख्यतः झोलाछाप डॉक्टरों पर निर्भर रहते हैं। स्वच्छ पेयजल और शौचालय की सुविधाएँ अपर्याप्त हैं। पोषण की कमी और संक्रामक रोगों की दर अधिक है।

शुद्ध जल की उपलब्धता बढ़ाने की जरूरत है, विशेष रूप से नगवां और बजरडीहा में। सभी बस्तियों में शौचालय सुविधाओं में सुधार की आवश्यकता है, जिससे स्वच्छता और स्वास्थ्य समस्याओं को कम किया जा सके। सरकारी अस्पताल की उपलब्धता सुनिश्चित करनी होगी, खासकर मदनपुरा, मलदहिया और बजरडीहा में। सरकार और सामाजिक संगठनों को इन क्षेत्रों में बुनियादी ढांचे में सुधार के लिए पहल करनी चाहिए।

सुझाव

1. **शिक्षा सुधारः** मलिन बस्तियों में निःशुल्क शिक्षा केंद्रों की स्थापना की जाए। महिला शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए विशेष योजनाएँ लागू की जाएँ।
2. **रोजगार के अवसरः** स्वरोजगार और कौशल विकास के प्रशिक्षण केंद्र स्थापित किए जाएँ। महिलाओं के लिए विशेष ऋण योजनाएँ शुरू की जाएँ।
3. **स्वास्थ्य एवं स्वच्छताः** स्वास्थ्य शिविरों का नियमित आयोजन किया जाए। मलिन बस्तियों में उचित जल निकासी एवं सफाई व्यवस्था की जाए।
4. **सरकारी योजनाओं की जागरूकताः** लाभार्थियों को योजनाओं की जानकारी देने के लिए अभियान चलाए जाएँ। योजनाओं के क्रियान्वयन की निगरानी हेतु स्थानीय निकायों की भागीदारी सुनिश्चित की जाए।

अतः वाराणसी नगर निगम क्षेत्र की मलिन बस्तियों में निवासरत लोगों की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए सरकार, गैर–सरकारी संगठनों और समाज को मिलकर प्रयास करने की आवश्यकता है। केवल बुनियादी सुविधाओं की उपलब्धता ही नहीं, बल्कि सामाजिक चेतना और सामुदायिक भागीदारी से इन क्षेत्रों का समग्र विकास संभव हो सकता है।

संदर्भ सूची

1. गुप्ता, वी. (2017) मलिन बस्तियों में शिक्षा की स्थिति और सुधार की संभावनाएँ. भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, 8(2), 35–50।
2. एस. (2020) भारत में मलिन बस्तियों की स्वच्छता स्थिति और सरकारी योजनाएँ, *सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका,* 10(3), 55–70।
3. शर्मा, आर. (2015) भारत में मलिन बस्तियों की समस्याएँ एवं समाधान, *भारतीय सामाजिक शोध पत्रिका,* 12(2), 45–60।
4. सिंह, पी. (2018) शहरी गरीबी और मलिन बस्तियाँः भारतीय परिप्रेक्ष्य, *राष्ट्रीय विकास शोध जर्नल,* 5(1), 23–40।
5. तिवारी, आर. (2019) शहरीकरण और मलिन बस्तियों की बढ़ती चुनौतियाँः एक अध्ययन, *आर्थिक और सामाजिक परिप्रेक्ष्य,* 14(1), 65–80।

6. वर्मा, एस. (2022) मलिन बस्तियों में जीवन स्तर और सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियाँः एक समीक्षात्मक अध्ययन, *समाजशास्त्रीय अध्ययन पत्रिका,* 9(4), 30–45।

7. यादव, के. (2021) मलिन बस्तियों में स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धताः एक मूल्यांकन, *स्वास्थ्य और समाज,* 6(3), 40–55।

8. वाराणसी नगर निगम की वार्षिक वार्षिक रिपोर्ट 2023–2024।

9. भारत सरकार की जनगणना रिपोर्ट 2011।

****